प्रभात खबर लाइफ @ सिटी
जर्नलिज्म जिंदगी का
रांची, रविवार, 07.06.2026

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस आज

पढ़िए... कैसे दशकों के अनुसंधान और वैज्ञानिकों की मेहनत ने झारखंड को खाद्य सुरक्षा के मामले में बनाया आत्मनिर्भर

इनकी मेहनत से और पोषक हुआ निवाला

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

झारखंड में खाद्यान्न उत्पादन में पिछले कुछ वर्षों के दौरान उल्लेखनीय सुधार हुआ है. कृषि आंकड़ों के अनुसार, राज्य में धान का वार्षिक उत्पादन सामान्य वर्षों में लगभग 55 से 65 लाख टन के बीच रहता है. धान को चावल में परिवर्तित करने पर यह करीब 37 से 43 लाख टन चावल के बराबर होता है. दूसरी ओर, झारखंड की आबादी लगभग चार करोड़ के आसपास पहुंच रही है. यदि प्रति व्यक्ति औसत चावल खपत 90 से 100 किग्रा प्रतिवर्ष मानी जाये, तो राज्य की कुल वार्षिक आवश्यकता लगभग 36 से 40 लाख टन चावल बैठती है.

सामान्य वर्षों में झारखंड अपनी चावल की जरूरत का 90 से 110 प्रतिशत तक उत्पादन कर लेता है. अच्छी बारिश वाले वर्षों में राज्य अधिशेष (सरप्लस) की स्थिति में भी पहुंच सकता है. राज्य गठन के समय स्थिति ऐसी नहीं थी. शुरुआती वर्षों में राज्य में 30 से 40 लाख टन के आसपास ही धान का उत्पादन हो पाता था. लेकिन पिछले कुछ वर्षों में राज्य के वैज्ञानिकों के प्रयास से झारखंड अपनी आवश्यकता के लगभग बराबर धान का उत्पादन करने लगा है.

राज्य में जरूरत से अधिक सब्जियों का उत्पादन

राज्य में सब्जियों की खेती भी वैज्ञानिकों के प्रयास से ज्यादा समृद्ध हुआ है. राज्य जरूरत से अधिक सब्जियों का उत्पादन कर रहा है. फलों की कुछ किस्मों का उत्पादन भी अब राज्य में ही हो रहा है और उनकी गुणवत्ता भी बेहतर है. राज्य को खाद्य सुरक्षा देने में कई वैज्ञानिकों और कृषि अनुसंधान संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. प्रभात खबर ने ऐसे ही संस्थानों और वैज्ञानिकों पर रिपोर्ट तैयार की है, जिनके प्रयासों से झारखंड इस मुकाम तक पहुंचा है.

मेड इन झारखंड... नयी किस्मों और आधुनिक तकनीकों ने झारखंड को खाद्यान्न, सब्जी और फल उत्पादन में किया मजबूत, राज्य से बढ़ा निर्यात

पलांडू ने किसानों को दी अपना तरबूज उपजाने की तकनीक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) ने आठ मई 1979 को संयुक्त बिहार में रांची स्थित सेंट्रल हॉर्टिकल्चर एक्सपेरिमेंट स्टेशन की स्थापना की थी. इसका उद्देश्य पठारी क्षेत्र के अनुकूल फलों और सब्जियों की किस्मों का विकास करना था. वर्ष 2001 में इसे पहाड़ी व पठारी क्षेत्र के लिए कृषि प्रणाली अनुसंधान केंद्र के रूप में विकसित किया गया. पिछले 25 वर्षों में संस्थान 60 से अधिक किस्में विकसित कर चुका है. झारखंड का अपना तरबूज व परवल विशेष रूप से उल्लेखनीय है. पहले तरबूज व परवल बिहार के दियारा क्षेत्र से आते थे. वर्ष 2005 में वैज्ञानिकों ने तरबूज उत्पादन की नयी कृषि तकनीक विकसित की. पलांडू संस्थान के पूर्व प्रधान डॉ शिवेंद्र कुमार बताते हैं कि डॉ एलबी नायक, रणवीज सिंह व डॉ डीपी सिंह सहित वैज्ञानिकों की टीम ने तरबूज उत्पादन की नयी तकनीक विकसित की थी. आज दूसरे राज्यों से तरबूज मंगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती.

झारखंड की मिट्टी में उपजता है स्वाद से भरपूर 'पटनहिया परवल'

झारखंड में परवल की खेती की संभावनाओं पर पलांडू के वैज्ञानिकों ने वर्ष 1988 में अनुसंधान शुरू किया था. वर्ष 2000 के बाद झारखंड की जलवायु के अनुकूल किस्मों को अधिसूचित किया गया. आज बाजार में जिस परवल को आमतौर पर 'पटना परवल' (पटनहिया परवल) कहा जाता है, वह वास्तव में झारखंड में विकसित किस्म है. राज्य के लोगों को वर्षभर स्थानीय स्तर पर उत्पादित परवल उपलब्ध हो रहा है. पलांडू ने स्वर्णरेखा व स्वर्ण अलौकिक नामक किस्में विकसित की हैं. स्वर्णरेखा गहरे हरे रंग की होती है जबकि स्वर्ण अलौकिक हल्के हरे रंग की होती है. इसकी उपज क्षमता लगभग 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है. किसान इन्हीं किस्मों को 'पटना परवल' के नाम से बेचते हैं. यह परवल लत्तर पर तैयार होता है. इसे डॉ एसआर कृष्णा प्रसाद ने विकसित किया है. इसके अतिरिक्त संस्थान ने बरसात के मौसम में तैयार होने वाली टमाटर की किस्म भी विकसित की है.

बीएयू और भाभा केंद्र की पहल से विकसित हुई उन्नत सरसों किस्म

बिरसा कृषि विवि द्वारा विकसित बिरसा भाभा मस्टर्ड (सरसों)-1 किस्म विकसित हुई, जो आज भी किसानों के बीच प्रचलित है. मुख्य विशेषताएं है कि यह कम पानी में अच्छी पैदावार देता है. मोटे दाना वाला इस सरसों में 39 से 41 प्रतिशत तेल निकालने की क्षमता है. इसकी पैदावार क्षमता 15 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है. विभाग इस पर वर्षों से काम कर रहा था.

डॉ अरुण कुमार, वरीय वैज्ञानिक

बिरसा कृषि विवि की बिरसामति बनी सुगंधित धान की पहचान

बिरसा कृषि विवि द्वारा धान की विकसित किस्म बिरसामति है. यह उत्तम गुणवत्ता वाले सुगंधित धान है. खासियत है कि यह लंबे दाना वाला है. कीड़ा व रोग रहित यह धान 130 दिनों में ही पक कर तैयार हो जाता है. झारखंड सहित देश के अन्य राज्यों मसलन मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान में यह किस्म प्रचलित है. उपज क्षमता औसत उपज 35 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है.

डॉ डीएन सिंह, मुख्य वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विवि

झारखंड से पंजाब तक लोकप्रिय हुई बिरसा गेहूं-4 किस्म

झारखंड ही नहीं बल्कि पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश में किसानों के बीच गेहूं की काफी प्रचलित किस्म बिरसा गेहूं-4 (जिसे जेकेडब्ल्यू-261) का विकास बिरसा कृषि विवि द्वारा ही किया गया है. इसके बाद बिरसा गेहूं-5 और बिरसा गेहूं-6 किस्म भी शामिल हुए है. खासियत यह है कि यह उच्च उपज, कम पानी की आवश्यकता और झारखंड के जलवायु के अनुकूल है.

डॉ सूर्यप्रकाश, वरीय वैज्ञानिक, बीएयू